Daily Gospel Reflections in Hindi

23 August 2019

मत्ति 22: 34 – 40

The most important Commandments

प्रभु येसु से एक शास्त्री पूछता है कि सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है? अब इसे शास्त्री की नादानी कहें या और कुछ जो प्रभु येसु को "गुरुवर" कह कर संबोधित करता और उन से वह प्रश्न पूछता है जिस का उत्तर हर यहूदी के लिए जान ना आवश्यक था। हो सकता कि उस का यह प्रश्न प्रभु का मजाक उड़ाने के लिए हो। अगर येसु उत्तर नहीं देते तो वह बोलता –एक यहूदी हो कर इतना भी नही जानते या फिर कि वह प्रभु को निम्न स्तर का मान कर यह साबित करना चाहता कि आप से बस इतना ही पूछा जा सकता है–! इसी अध्याय के पहले के वाक्यों में प्रभु येसु सदूकियों के इस से भी कठिन और चतुर सवाल का सटीक उत्तर देते हैं, फिर यह प्रश्न पूछना शास्त्री का स्वयं अपना या प्रभु का मजाक उड़ाता हुआ लगता है।

प्रभु येसु अब तक इन यहूदी स्वघोषित नेताओं के रग–रग से परिचित हो चुके थे। वे उन के प्रश्न पूछने के कारण और मकसद दोनों भली भांति समझते थे। उन्होनें फिर सटीक उत्तर दिया कि अपने ईश्वर को सर्वस्व से प्यार करना और अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार करना ही सबसे बड़ा विधान, नियम और धर्म है। प्रेम रुपी शब्द ही विधान है, वचन है और ईश्वर है। प्रेम सब कुछ को परिभाषित करता है, हर विधान और आज्ञा का आधार है । प्रेम के द्वारा ईश्वर है और ईश्वर के द्वारा प्रेम है। हमारे प्रेम का प्रथम अधिकारी ईश्वर है और दूसरा हमारा पड़ोसी है। इस से हट कर जो है वह प्रेम का उल्लंघन है और जो प्रेम के विरुद्ध है वह सहिंता के विरुद्ध है, जो सहिंता के विरुद्ध है, वह ईश्वर के विरुद्ध है जिसने सहिंता दी है। हमारे पाप स्वीकार का आधार यही प्रेम होना चाहिए और हर सत्कार्य का स्रोत भी यही प्रेम होना चाहिए।

Rev. Fr. Anil Francis

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019